ISSN : 2279-0330

द्विमासिक

शीराज़ा

हिन्दी

अर्धशती विशेषांक

फरवरी – मार्च 2015

प्रमुख संपादक

हारून रशीद

संपादक

अज़रा चौधरी

जे० एंड के० अकैडमी ऑफ आर्ट, कल्चर एंड लैंग्वेजिज़, जम्मू-180 001

संस्मरण

जब शीराज़ा में छपी मेरी पहली कविता

❑ डॉ० महाराज कृष्ण भरत

शीराज़ा जम्मू कश्मीर जैसे हिन्दीतर प्रांत की हिन्दी पत्रिका है जिसने अपने कलेवर, सृजन एवं समालोचना से हिन्दी प्रांतों के लेखकों एवं पाठकों को भी अपनी ओर आकर्षित किया है। यह पत्रिका हिन्दीतर प्रांत और हिन्दी प्रदेशों के मध्य एक संप्रेषण का माध्यम भी है। आज अन्तरताने के युग में एक रचनाकार कई माध्यमों से अपनी रचनाएं समाज तक पहुंचा सकता है पर शीराज़ा जैसी पत्रिकाओं की गरिमा, प्रतिष्ठा कम नहीं हुई है। पहले से भी इसकी उपादेयता और बढ़ी है। एक लेखक इन्हीं पत्रिकाओं के माध्यम से अपनी पहचान बनाता है, सृजनात्मक प्रतिभा को और निखारता है और धीरे-धीरे लेखकीय कर्म के साथ जुड़कर समाज का हो जाता है, देश के प्रति अपना योगदान देता है।

आज से लगभग 27 वर्ष पूर्व जब मैं हिन्दी साहित्य में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त करने के बाद एम० फिल० में शोधरत था तो उन्हीं दिनों एक आत्मीय सम्पर्क सूत्र के माध्यम से मेरा सम्पर्क 'शीराज़ा' (हिन्दी) के सम्पादक जी से हुआ और मेरे लेखन कर्म को एक गति मिल गई। यह 1987-88 की बात है जब शीराज़ा के तत्कालीन सम्पादक डॉ० ओम गोस्वामी के कश्मीर भ्रमण के बारे में मुझे ज्ञात हुआ। उनके कश्मीर आने के प्रयोजन के बारे में मुझे ज्ञात नहीं, पर इतना अवश्य स्मरण है कि एक दिन वह हमारे पैतृक गांव मार्तण्ड भी आए थे। गांव ही में मेरे मित्र श्री उमेश खार का सम्पर्क सम्पादक जी की टोली के एक सदस्य के साथ था और उन्हीं के माध्यम से डॉ० ओम गोस्वामी के साथ मेरी पहली भेंट हुई। उन्होंने मेरी आशाओं को जगाया और मैंने कुछ कविताएं उन्हें शीराज़ा में प्रकाशनार्थ दीं।

यह अलग बात है कि उन दिनों कश्मीर के हिन्दी लेखक निरंतर शीराज़ा में छपते रहते थे, पर एक नवलेखक का शीराज़ा जैसी पत्रिका में छपना...दुष्कर सा कार्य था। शोधार्थी होने के नाते कश्मीर विश्वविद्यालय की हिन्दी विभाग की शोधपत्रिका 'वितस्ता' या फिर हिन्दी विभाग के आचार्य डॉ० अयूब प्रेमी तथा डॉ० सोमनाथ कौल द्वारा सम्पादित निजी पत्रिका 'हिमानी' में छपना भी प्रोत्साहित करने वाली बात थी, पर राज्य की पत्रिका 'शीराज़ा' में छपने की उत्सुकता कुछ और ही थी। एक तो यह निरंतर प्रयास था और दूसरा यह भी कि यह पत्रिका राष्ट्रीय साहित्यकारों की दृष्टि में थी। उनके लेख भी इसमें छपते थे। 'शीराज़ा' में छपने

---

* *शारदा कालोनी, पटोली ब्राह्मणा, मूट्ठी जम्मू-181205*

का अर्थ था कि राज्य के साथ-साथ एक लघुभारत भी हमारे रचनाओं को देख-परख सकता था।

'शीराज़ा' हिन्दी (द्विमासिक)का जून-जुलाई 1988 का अंक जब मुझे मार्तण्ड गांव में प्राप्त हुआ, तो मैं फूले नहीं समाया। पृष्ठ 66-67 पर मेरी कविता 'यदि, तुम मेरा साथ देती' छपी थी। इस प्रकाशित रचना को देखकर मेरा मन उत्साह के साथ भर गया। मन में आशाएं और जगीं। मैं उत्साह के साथ और लिखने लगा। तदन्तर मैं शीराज़ा में निरंतर छपने लगा। शीराज़ा जैसी प्रतिष्ठित पत्रिका में यह मेरी पहली कविता थी।

1990 में जब सामूहिक विस्थापन के बाद पैतृक गांव कहीं पीछे छूट गया, तब मुझे क्रौंच पक्षी के वध की उस पीड़ा का अनुभव हुआ था, जिस घटना से आहत होकर बाल्मिकी का कवि मन हूक पड़ा था और फूट पड़ी थी कविता की रसवंती धारा-

''मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः।
यत् क्रौंच मिथुनादेकम् अवधीः काम मोहितम्॥''

इसी श्लोक के बाद उन्होंने रामायण जैसे महाकाव्य की रचना की थी। हमारे मन के भीतर भी घर की संवेदनाएँ जगीं और 'फिरन में छिपाए तिरंगा' कविता संग्रह प्रकाश में आया। इस संग्रह में 1990 से 1995 तक तथा उससे पहले की लिखीं कुछ क़विताएं संकलित की गईं। यह शीराज़ा सम्पादक मण्डल के लिए एक हर्ष का विषय होना चाहिए कि इसी संग्रह पर 29 सितम्बर 1997 को जम्मू कश्मीर की कला, संस्कृति एवं भाषा अकादमी द्वारा 1996-97 के बेस्ट बुक अवार्ड से मुझे पुरस्कृत किया गया। कश्मीर में अस्थिरता के कारण श्रीनगर जाकर पुरस्कार ग्रहण के बारे में मेरे मन में अनिश्चितता थी, पर तत्कालीन अकादमी के सचिव श्री बलवंत ठाकुर ने मेरा मनोबल बढ़ाया और मैं दिल्ली से इस पुरस्कार को लेने के लिए श्रीनगर गया। उन दिनों मैं महानगर में पत्रकारिता के क्षेत्र में सक्रिय था।

बात यही नहीं थमी, इसी संग्रह पर केंद्रीय हिन्दी निदेशालय (मानव संसाधन विकास मंत्रालय, दिल्ली) द्वारा हिन्दीतर भाषी हिन्दी साहित्यकारों की श्रेष्ठ कृतियों पर दिए जा रहे पुरस्कार (1995-96)के अंतर्गत काव्यकृति 'फिरन में छिपाए तिरंगा' को पुरस्कृत किया गया। यह पुरस्कार तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ० शंकर दयाल शर्मा द्वारा प्राप्त करने का सौभाग्य मिला।

जब 'फिरन में छिपाए तिरंगा' की आधारभूमि बन रही थी तो उन्हीं दिनों केंद्रीय हिन्दी निदेशालय द्वारा आयोजित 'हिन्दीतर भाषी हिन्दी नवलेखक कार्यशिविर' में मेरा इम्फाल (मणिपुर)जाना हुआ। वर्ष 1993 था। वहां कल्चरल अकादमी, जम्मू कश्मीर के अतिरिक्त सचिव एवं हिन्दी के लब्ध प्रतिष्ठित लेखक एवं कवि श्री रमेश मेहता जी का सान्निध्य प्राप्त हुआ। वे एक मार्गदर्शक के रूप में पधारे थे। इस संग्रह में संकलित कुछ कविताओं को उन्होंने परिष्कृत करने का मार्गदर्शन दिया था, और उस दिशा की ओर मैं उन्मुख भी हुआ।

यहां केवल शीराज़ा की स्मृतियों को सांझा करना है इस कारण केंद्रीय हिन्दी निदेशालय से 1986 में अपने पहले सम्पर्क के बारे में बात नहीं करूंगा, न यह प्रकट करने की चेष्टा करूंगा कि कितनी आत्मीयता के साथ हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध लेखक, कवि एवं दूरदर्शन के चर्चित कलाकार श्री महाराज शाह मुझे रेडियो स्टेशन श्रीनगर ले गए थे और वह हिन्दी के ख्यातिवान कवि एवं कार्यक्रम अधिकार श्री मोहन निराश से मेरी भेंट कराई थी। यह 1984 की बात है। श्री शाह मेरे पैतृक गांव के निवासी हैं और मेरे आत्मीय बंधु हैं।

'शीराज़ा' के साथ एक लेखक का भावात्मक संबंध तो रहता ही है। कुछ खट्टे-मीठे अनुभव भी होते हैं। कभी हम छपते हैं कभी छप नहीं पाते। कभी सम्मेलनों, कवि-गोष्ठियों में आमंत्रित किए जाते हैं, और कभी सम्पर्क सूत्र बदलने के कारण सम्मिलित होने से रह जाते हैं। पर मैंने उस आत्मविश्वास को कभी डिगने नहीं दिया जो डॉ० ओम गोस्वामी (हिन्दी-डोगरी के ख्यातिवान लेखक) ने मेरे भीतर अंकुरित किया था। आज इस विशेष आयोजन के माध्यम से वर्तमान सम्पादक ने जोड़कर मेरे उन संबंधों को दृढ़ता प्रदान की है। बहुत कुछ अकथनीय रह गया, जो मेरे मानस पटल पर हरा ही रहेगा। राज्य और देश की कई संस्थानों ने मेरे लेखन को प्रोत्साहित किया, कुछ राष्ट्रीय स्तर की पत्रिकाओं में भी छपने का अवसर मिल रहा है। दो कविता संग्रह, एक पुस्तक, तीन सम्पादित पुस्तकों के अतिरिक्त साहित्य अकादमी की अनुवाद योजनाओं में भी सम्बद्ध रहा। प्रादेशिक राष्ट्रीय सम्मेलनों में भाग लेकर हिन्दी के गौरव को और बढ़ाने का प्रयास ही किया है। कुछ कहानियां भी लिखीं, मानव संसाधन विकास मंत्रालय के संस्कृति विभाग से वर्ष 2000 में जूनियर फैलोशिप प्रदान हुआ। 'सौहार्द सम्मान' उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान से प्राप्त हुआ। कई नवलेखकों को प्रोत्साहित करन के लिए भी प्रयासरत रहता हूँ।